प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास

(छठी शताब्दी ई.पू. से 550 ई. तक)

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास

(छठी शताब्दी ई.पू. से 550 ई. तक)

डॉ. ज्ञानेन्द्र पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग,
बी0आर0डी0पी0जी0 कालेज,
देवरिया

नमूना • SAMPLE

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास
(छठी शताब्दी ई.पू. से 550 ई. तक)

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-88-8

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संग्रहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आर्ना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

विषय-सूची

	प्राक्कथन	***vii***
1.	छठी सदी ई.पू. का राजनीतिक इतिहास	1
2.	षोडस महाजनपद	35
3.	बौद्ध धर्म का राजनीतिक इतिहास	61
4.	जैन धर्म	90
5.	मगध साम्राज्य का इतिहास	114
6.	मौर्य साम्राज्य का राजनीतिक इतिहास	122
7.	मौर्योत्तर काल में राजनीतिक विस्तार	138
8.	चन्द्रगुप्त मौर्य	162
9.	अशोक	180
10.	गुप्त साम्राज्य का इतिहास	203
11.	हर्ष का राजनीतिक इतिहास	254

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

वैदिक युग के जनपद अब महाजनपद में ढल गए। महाजनपद का विस्तार उ.प. में पाकिस्तान और द. में गोदावरी तक हुआ। 15 महाजनपद नर्मदा से उत्तर है जबकि एक अश्मक, नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है। बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय एवं महावस्तु तथा जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र से 16 महाजनपदों के बारे में सूचना मिलती है। किन्तु महावस्तु में गांधार और कंबोज के बदले पंजाब में शिवा और मध्य भारत में दर्शन का उल्लेख किया गया है। उसी तरह भगवती सूत्र में बंग एवं मलय महाजनपद की चर्चा की गयी है। अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। सबसे अधिक जनपद गंगा घाटी में देखे जा सकते हैं।

प्राचीनकालिक साक्ष्यों को देखने पर इसमें कोई सन्देह नहीं रह जाता कि प्राचीन भारतीय इतिहास को लिखने तथा ऐतिहासिक महत्व की घटनाओं को सुरक्षित करने के प्रति पर्याप्त सचेष्ट थे। मौर्य काल से ही राजकीय अभिलेखागार के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है।

नंद वंश की स्थापना उग्रसेन या महापदमनंद ने की। पुराण उसे शिशुनाग वंश का अंतिम राजा महानन्दिन का पुत्र और शूद्र स्त्री से उत्पन्न बताता है। दूसरी तरफ जैन लेखक उसे एक नाई और वेश्या का पुत्र बताते हैं। पुराणों में उसे सर्व क्षत्रातंक की उपाधि दी गई है। कलिंग के शासक खारवेल के हाथी गुफा अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि उसने कलिंग के कुछ क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। उसके राज्य के अंतर्गत पंजाब से संपूर्ण उत्तरी भारत, मालवा मध्य प्रदेश तथा गोदावरी नदी तक का इलाका आ गया। प्रथम नंद के लगभग आठ उत्तराधिकारी माने जाते हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास के ऐसे कई युग हैं, जिनके विषय में हमें मुख्य रूप से पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त सूचनाओं से जानकारी मिलती है। भारत के प्रागैतिहासिक काल के विषय में हमारी सम्पूर्ण जानकारी पुरातात्विक साक्ष्य के ऊपर ही आधारित है। भारतीय सभ्यता के प्रथम चरण सैन्धव सभ्यता के विषय में हम कुछ भी नहीं जान पाते यदि इसके विषय में हमें पुरातात्विक साक्ष्य से

सहायता नहीं मिलती। ऐतिहासिक काल में भी कई स्थानों के पुरातात्विक उत्खननों से हमें ऐसी महत्वपूर्ण सूचनायें मिलती है, जिनके विषय में अन्यथा हम कभी नहीं जान पाते। शिशुपालगढ़, राजगृह, अरिकामेड इत्यादि ऐतिहासिक युग के स्थानों पर उल्खान कार्यों से हमें तत्कालीन युग के विषय में बड़ी ही महत्वपूर्ण सूचनायें मिली हैं।

छठी शताब्दी ई.पू. के प्रारंभ में मगध पटना तथा गया के निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित था। इसके उत्तर तथा पश्चिम में क्रमशः सोन तथा गंगा नदियाँ थीं। इसकी राजधानी राजगृह पाँच पहाड़ियों से घिरा अभेद्य शहर था। पांचवी शताब्दी ई.पू. के आस-पास राजधानी पाटलिपुत्र स्थानांतरित कर दी गयी। मगध के चारों ओर सुरक्षा के पर्याप्त साधन उपलब्ध थे। अर्थात् सामरिक दृष्टि से मगध की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी।

प्रस्तुत पुस्तक में राजनीतिक इतिहास मूलभूत संकल्पनाओं के विशाल क्षितिज को समेटने का प्रयास किया गया है, जो स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों तथा अन्य प्रयोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त सार्थक एवं उपादेय सिद्ध होगा।

डॉ. ज्ञानेन्द्र पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास विभाग,
बी0आर0डी0पी0जी0 कालेज,
देवरिया

1

छठी सदी ई.पू. का राजनीतिक इतिहास

यह काल बुद्ध और महावीर का काल था।

राजनीतिक विस्तार

वैदिक युग के जनपद अब महाजनपद में ढल गए। महाजनपद का विस्तार उ.प्र. में पाकिस्तान और द. में गोदावरी तक हुआ। 15 महाजनपद नर्मदा से उत्तर है जबकि एक अश्मक, नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है। बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय एवं महावस्तु तथा जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र से 16 महाजनपदों के बारे में सूचना मिलती है। किन्तु महावस्तु में गांधार और कंबोज के बदले पंजाब में शिवा और मध्य भारत में दर्शन का उल्लेख किया गया है। उसी तरह भगवती सूत्र में बंग एवं मलय महाजनपद की चर्चा की गयी है। अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। सबसे अधिक जनपद गंगा घाटी में देखे जा सकते हैं।

अवन्ति–पश्चिम भारत में यह मालवा एवं मध्यप्रदेश में स्थित था। उत्तरी अवन्ति की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिण अवन्ति की राजधानी महिष्मति थी। गौतम बुद्ध के समय अवन्ति का शासक चण्डप्रद्योत था। मगध सम्राट शिशुनाग ने अवन्ति को मिला लिया।

अंग–इसकी राजधानी चम्पा थी। मगध के शासक बिम्बसार ने यहाँ के शासक ब्रह्मदत को पराजित कर मगध साम्राज्य में मिला लिया।

ARIHANT SAMPLE

अश्मक–यह गोदावरी नदी के किनारे स्थित है। इसकी राजधानी पतिन या पोतना थी। संभवत: अवन्ति ने इसे अपने राज्य में मिला लिया।

चेदि–यह यमुना नदी के किनारे स्थित था। इसकी राजधानी सोथीवती थी। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण राजा शिशुपाल था, जिसकी चर्चा महाभारत में हुई है।

गांधार–यह पाकिस्तान में पेशावर और रावलपिंडी में स्थित है। इसकी राजधानी तक्षशिला थी। यह विद्या एवं व्यापार का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। इसका शासक पुष्कासीरीन था। ग्रीक रचनाकार इसे 'पुक्कुस' कहते हैं। माना जाता है कि मगध शासक बिम्बसार के साथ इसके राजनयिक संबंध थे। प्रो. हेमचंद्र राय चौधरी के अनुसार, छठी सदी ई. पूर्व में गांधार पर फारस (ईरान) का अधिकार हो गया।

शिशुनागवंश–बौद्ध साहित्य के अनुसार राजा नागदाशक को नागरिकों के द्वारा निष्कासित कर दिया गया। फिर नागरिकों ने एक सभा बुलाई और शिशुनाग को शासक नियुक्त किया। शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक हुआ। उसके बाद उसके दस पुत्र राजा हुए। इनमें नवम् नन्दिवर्धन एवं दशम पंचमक थे। शिशुनाग ने अवन्ति को मगध में मिला लिया। शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक या काकवर्णिन था। कालाशोक के विषय में कहा जाता है कि उसने पाटलिपुत्र के अतिरिक्त वैशाली को भी अपनी राजधानी बनाई थी।

नंद वंश–नंद वंश की स्थापना उग्रसेन या महापदमनंद ने की। पुराण उसे शिशुनाग वंश का अंतिम राजा महानन्दिन का पुत्र और शूद्र स्त्री से उत्पन्न बताता है। दूसरी तरफ जैन लेखक उसे एक नाई और वेश्या का पुत्र बताते हैं। पुराणों में उसे सर्व क्षत्रातंक की उपाधि दी गई है। कलिंग के शासक खारवेल के हाथी गुफा अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि उसने कलिंग के कुछ क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। उसके राज्य के अंतर्गत पंजाब से संपूर्ण उत्तरी भारत, मालवा मध्य प्रदेश तथा गोदावरी नदी तक का इलाका आ गया। प्रथम नंद के लगभग आठ उत्तराधिकारी माने जाते हैं। धनानंद इस वंश का अंतिम शासक था। इसे ग्रीक लेखक अग्रमीज कहते हैं।

1. **मल्ल**–यह एक गणतंत्र था। इसकी राजधानी कुशीनारा एवं पावा थी।
2. **मत्स्य**–यह भरतपुर जयपुर एवं अलवर क्षेत्र में विस्तृत था। इसकी

राजधानी विराटनगर थी। मत्स्य को चेदि के द्वारा मिला लिया गया।

3. **पांचाल**–यह प. उत्तर प्रदेश में स्थित था। इसकी राजधानी अहिच्छत्र और कांपिल्य थी।
4. **सूरसेन**–यह मथुरा प्रदेश में स्थित था। इसके शासक यदु या यादव कहलाते थे।
5. **वृज्जि**–वज्जि संघ में आठ गणराज्य शामिल थे। इसमें वज्जि, विदेह, और लिच्छवि प्रमुख थे।
6. **वत्स**–इसकी राजधानी कौशांबी थी। माना जाता है कि कुरु वंशज ने एक बाढ़ के कारण हस्तिनापुर को छोड़ दिया। और उन्होंने नये जनपद वत्स को जन्म दिया।

काशी–इसकी राजधानी वाराणसी थी। प्रारंभ में यह एक शक्तिशाली राज्य था। किन्तु आगे चलकर यह कोशल के साम्राज्यवाद का शिकार हो गया। जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन काशी के राजा थे।

कोशल–सरयू नदी इसे दो भागों में विभाजित करती है। उ. कोशल की आरंभिक राजधानी श्रावस्ती थी। बाद में वह साकेत या अयोध्या हो गई। दक्षिण कोशल की राजधानी कुशावती थी। प्रसेनजित और विदुधान के प्रयास से कोशल राज्य का विस्तार हुआ। काशी, मल्ल और शाक्य को कोशल के साम्राज्यवाद का शिकार होना पड़ा। अजातशत्रु ने कोशल को मगध साम्राज्य में मिला लिया।

कुरु–यह दिल्ली मेरठ क्षेत्र में विस्तृत था। इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी।

कम्बोज–यह प. सीमा का दूसरा महत्त्वपूर्ण राज्य था। इसकी राजधानी हाटक या राजपुर थी। इसके दो महत्त्वपूर्ण शासक चन्द्रवर्धन और सुदक्षिण थे।

मगध–आधुनिक पटना, गया एवं शाहाबाद का क्षेत्र इस राज्य में शामिल था। इसकी प्राचीन राजधानी गिरिव्रज थी। बाद में इसकी राजधानी पाटलिपुत्र हो गई। पुराणों के अनुसार इस वंश का प्रथम शासक शिशुनाग था। किन्तु बौद्ध लेखक इसकी वंशावली हर्यंक वंश के प्रथम शासक बिम्बसार से प्रारंभ करते हैं। उसका शासनकाल 544 ई.पू. से 492 ई.पू. था। इसका वृज्जि (लिच्छवि) कोशल एवं मद्र क्षेत्रों से वैवाहिक संबंध था। वैवाहिक संबंध के बदले कोशल

NCERT SAMPLE

से इसे काशी का गाँव प्राप्त हुआ, जिसकी राजस्व 1 लाख सिक्के वार्षिक थी। इससे संकेत मिलता है कि उस समय भू-राजस्व का आकलन मुद्रा में होने लगा था। बिम्बसार ने अंग के शासक ब्रह्मदत्त को पराजित करके अंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया। बिम्बसार ने 80 हजार ग्राम भोजकों की एक सभा बुलाई। मगध के पुनर्गठन का श्रेय भी बिम्बसार को दिया जाता है। शासनकार्य में राजा की सहायता के लिए बहुत से महामात्र होते थे। इनकी तीन श्रेणियों होती थीं। स्त्वाताकि, वोहारिक और सेनानायक। राज्य के सामान्य प्रशासन के पदाधिकारियों को सत्वात्थक कहा जाता है गांधार के शासक पुष्कासीरिन से इसके राजनयिक संबंध थे। अवन्ति के शासक चन्द्रप्रद्योत महासेन की चिकित्सा के लिए उसने अपने राजवैद्य जीवक को भेजा। इसने मगध साम्राज्य की राजधानी गिरिव्रज की स्थापना की। उसके पुत्र अजातशत्रु ने उसकी हत्या कर दी। बिम्बसार 'श्रेणिक' के नाम से जाना जाता था। उसका उत्तराधिकारी अजातशत्रु (492 B.C.-460 B.C.) हुआ। अजातशत्रु कुणिक के नाम से जाना जाता था। उसने अपने पिता की साम्राज्यवादी नीति को आगे बढ़ाया। उसने कोशल को पराजित किया और प्रसेनजित की पुत्री वजीरा से शादी की। माना जाता है कि उसने वृज्जि संघ की शक्ति को तोड़ दिया। अपने मंत्री सुनीध एवं वर्षाकार की मदद से वह वृज्जि संघ में फूट डलवाने में सफल रहा और फिर उसने इस संघ को समाप्त कर दिया। भगवती सूत्र के अनुसार अजातशत्रु ने 9 लच्छवियों, 9 मल्लों तथा काशी कोशल के 18 गणराज्यों के संघ को परास्त किया। पुराणों के अनुसार अजातशत्रु का निकटतम उत्तराधिकारी दर्शक था। किन्तु जैन एवं बौद्ध लेखक उदयिन को उसका उत्तराधिकारी मानते हैं। उदयिन को यह श्रेय दिया जाता है कि उसने कुसुमपुर या पाटलिपुत्र की नींव डाली।

भारत में आर्यों का इतिहास

उत्तरी भारत में आर्यों के बढ़ाव के साथ उनकी संस्कृति का केन्द्र भी पूर्व की ओर बढ़ता गया। अब सरस्वती तट सबसे पवित्र स्थान समझा जाने लगा और वहाँ अनेक पवित्र ओर महत्वपूर्ण यज्ञ हुए। इस पवित्र नदी और गंगा के बीच की भूमि कट्टर आर्य संस्कृति का केन्द्र बन गई। इस परिवर्तन का उदाहरण इससे बड़ा और क्या हो सकता है कि इस प्रदेश के निवासी पंजाब

के आर्यों को अशुद्ध रक्त का समझने लगे और उन्हें शील-स्वभाव और आचार से हीन मानने लगे।

शक्तिशाली राज्यों का विकास

आर्यों के फैलाव के फलस्वरूप अन्य अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। पुराने कबीलों को धीरे-धीरे और अधिक सुदृढ़ और संगठित किया गया और उनमें से अनेक शक्तिशाली प्रादेशिक राज्यों के रूप में विकसित हो गये। कितने ही पुराने प्रसिद्ध कबीले लुप्त हो गये और उनकी जगह नये कबीलों का प्राधान्य हुआ। इस प्रकार सुप्रसिद्ध भरतों, पुरुषों, तृत्सुओं, और तुर्वसुओं का या तो तेजी से ह्रास हुआ या वे कुरुओं और पांचालों आदि नये जनों में विलीन हो गये। कुरुओं और पांचालों के नाम ऋग्वैदिक ऋचाओं में नहीं मिलते; किन्तु इस काल में उनका महत्व काफी बढ़ गया था। राजनीतिक जीवन अधिक संघर्षमय हो गया और प्रभुत्व के लिए विभिन्न राज्यों के बीच अक्सर युद्ध होने लगे। सार्वभौम साम्राज्य का आदर्श पहले से ही राजनीतिक क्षितिज पर वर्तमान था और यह नहीं कहा जा सकता कि वह किसी बड़ी हद तक कभी साकार नहीं हुआ।

अश्वमेध और **राजसूय** यज्ञों का साहित्य में इतना अधिक उल्लेख है कि उनको केवल कल्पना कहकर उपेक्षित नहीं किया जा सकता। जिन राजाओं ने इनमें से कोई भी यज्ञ किया, उनका तत्कालीन और एकमात्र उद्देश्य अन्य राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना ही था। हम यह आसानी से मान सकते हैं कि राजनीतिक दृष्टि से वैदिक भारत में वे सारे तत्व प्रकट होने लगे थे जो इसके इतिहास के सभी कालों में परिलक्षित होते रहे हैं, तथा अनेक राज्यों का अस्तित्व, प्रभुत्व के लिए युद्ध और समय-समय पर इनका किसी एक शक्तिशाली साम्राज्य-निर्माता की अप्रतिवार्य शक्ति के सम्मुख नत हो जाना।

इसके कुछ ठोस उदाहरण दिये जा सकते हैं। शतपथ ब्राह्मण में भरतों के दो राजाओं—भरत दौष्यन्ति और शतानीक सात्राजित के अवश्मेघ यज्ञ करने का उल्लेख है। उन्होंने गंगा और यमुना तक बढ़कर पूर्व में काशी और पश्चिम में सात्वतों को जीता। इस ब्राह्मण में एक प्राचीन **गाथा** दी हुई है जिसमें कहा गया है कि "भरतों की सी महत्ता न तो उनसे पूर्व और न उनके बाद किसी अन्य जाति ने प्राप्त की।" **शतपथ ब्राह्मण** में कोशलनरेश 'पर' एक नाम है,

ऐक्ष्वाकुराज पुरुकुत्स, आयोगव नरेश मरुत्त आविक्षित, पांचालराज क्रैव्य और शीण सात्रासाह, मत्स्यराज ध्वसन द्वैतवन और स्विक्नराज ऋषभ याज्ञतुर के भी अश्वमेघों के उल्लेख है।

ऐतरेय ब्राह्मण में स्पष्ट रूप से ऐसे बारह राजाओं की चर्चा है जो महाभिषेक संस्कार हो जोने के बाद पृथ्वी पर विजय करते हुए एक कोने से दूसरे कोने तक घूमते फिरे और उन्होंने अश्वमेघ यज्ञ किये थे। उनमें तीन तो वे ही हैं जिनका **शतपथ ब्राह्मण** में भी उल्लेख है।

राजनीतिक इतिहास

प्रभुत्व के लिए किये जाने वाले संघर्षों की इस पृष्ठभूमि में ही इस काल के राजनीतिक इतिहास का अध्ययन किया जा सकता है। किन्तु खेद है कि निश्चित बातें बहुत कम ही ज्ञात है। शुरू से ही राजाओं और राजवंशों के सम्बन्ध में सही अनुश्रुतियाँ प्रचलित रहीं, इनमें सन्देह नहीं; किन्तु हजारों वर्षों से परम्परागत क्रम में आते-आते उनके अधिकांश पाठ लुप्त हो गये और जो बचा भी है, वह परिवर्तन और परिवर्द्धन से इतना दूषित हो चुका है कि उन अनुश्रुतियों को आज एक-दूसरे के साथ समन्वित करना प्रायः असम्भव है। अन्य विद्वानों की अपेक्षा पार्जिटर महोदय इस विषय के अध्ययन में अधिक गहराई तक गये और उन्होंने इन पुरानी अनुश्रुतियों के आधार पर इस काल के राजनीतिक इतिहास की रूपरेखा उपस्थित की। उनका मत अनेक अन्य विद्वानों को स्वीकार्य नहीं है।

किन्तु उन लोगों ने भी इस काल का जो इतिहास प्रस्तुत किया है वह आलोचना से परे नहीं है। यह तो स्वीकार करना ही होगा कि इनमें से किसी भी उप सिद्धान्त का शुद्ध ऐतिहासिक निर्णय नहीं कर सकते। सच तो यह है कि जो कुछ सामग्री है उसके आधार पर हम इसके विपरीत कुछ आशा भी नहीं कर सकते। पार्जिटर के सिद्धान्त बहुत संतोषजनक नहीं माने जा सकते और उनमें से कुछ के सम्बन्ध में तो घोर आपत्ति भी की जा सकती है। किन्तु भारत के आरम्भिक इतिहास के ढाँचे को प्रस्तुत करने का प्रथम साहसपूर्ण प्रयत्न होने के कारण उसके महत्व की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती। यहाँ उनके मुख्य निष्कर्षों का सारांश दिया जा रहा है।